चंदा रे तू छिप मत जैयो
कृष्ण चंद के संग थिर रहियो
बोलै कोयल मोर, मेरी अटरिया में।
कृष्ण रंग में रंगी गोपिका
गोपी प्रेम में श्याम हू बिका
जागत ही भई भोर, मेरी अटरिया में।।

------o------

मत बनै निरमोही सांवरिया रे।।

यमुना तट पर रात-रात भर बैठी दैखूं लहरिया रे।
चांदी सी चमकै सब रेती, खिलै जब रात जुन्हैया रे।
दैख्यो करुं बाट मैं हरदम, आवै कौंन डगरिया रे।
सावन गरजै भादों बरसै, ब्यार चलै पुरवैया रे।
देख्यो करुं बाट मैं तेरी, सूनी परी अटरिया रे।
रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसै,चमक रही है बिजुरिया रे।
देख्यो करुं बाट डार के झूला कदम की डरियां रे।
पूनों की जब खिलै उजारी, महकै फूल कियरिया रे।
कहाँ मिलैगो रे बेदरदी, सुनती रहूं बंसुरिया रे।
आवै ना कर के निठुराई, तरफूं जैसे मछरिया रे।।

कौन मेरे धंस आयो, कारी अंधेरी में।।

जैसी कारी रात अंधेरी
तैसौ कारौ कौउ धस्यो री
मैं निधरक ह्वै सोय रही री
आय औचकइ जगायो, कारी अंधेरी में।
पूछन लागी कौन तू आयौ
कहा गरज ते मोय जगायौ
नाम गाम कछु नाय बतायौ
कह्यौ सुन क्यों मैं आयौ, कारी अंधेरी में।
मेरौ नाम गाम तू जानैं
पनघट ही ते मोय पहचानैं
सैनन में तेरौ मन मानैं
कियौ तें मन कौ भायौ, कारी अंधेरी में।
अपनौ गाँव नाम मैं खोलूं
मैं ब्रज के गामन में डोलूं
ब्रजवासिन सौं हँसतौ बोलूं
नाम ब्रजराज कहायौ, कारी अंधेरी में।

जो तू ब्रज कौ राजा ऐसौ
बिना बुलाये आयबो कैसो
चोरन कौ तू राजा वैसौ
चोर के माखन खायौ, कारी अंधेरी में।
गोपी ग्वाला ब्रज में मेरे
चोरी के नाय दोष घनेरे
बन्यो श्याम तुम सबके चेरे
प्रेम सौं कण्ठ लगायौ, कारी अंधेरी में।।

------o------

कन्हैया ते प्रीति किये पछतानी।।

उनकी प्रीति रही सखी कैसे, जैसे कोई कहानी।
हम जानी यह प्रीति निभैगी, नैंक न राखी कानी।
कारो भंवरा कहां वह उड़ गयो, सूनी भई जिंदगानी।
ब्रज की गोपी ऐसे बोलीं, कुब्जा भई पटरानी।
ऐसो निठुर अहीर को जायो, जोग की बात बखानी।
तन को कारो मन को कारो, पहले ना हम जानी।
अब ये नैना हू पछतावै, झर-झर बरसत पानी।।

वा दिन बिक गई जा दिन देख्यो, मैंने सुन्दर नन्द कुमार

गौने की मैं नई लुगाई
ब्याही बड़े घरन में जाई
लाज बंधी मैं बहू कहाई
दुखने तिखने बास भयौ जहाँ जाय न नर और नार।
बड़ौ चतुर है ब्रज कौ रसिया
करै छेद नभ की हु बदरिया
निकस्यो मेरी गली संकरिया
गेंद खेलतो चलतौ आयौ लैकें संग के ग्वार।
सुन कोलाहल लागी झांकन
ठाड़ी देखन लगी झरोखन
चतुराई कीनी मनमोहन
गेंद उछार देख ऊपर कूँ दीयो जादू डार।
मिली आँख कोऊ देख न पायो
बांकी चितवन चितहि चुरायो
श्याम रंग हिय नैन समायो
सावन के अंधरे को सूझै सबरो जग हरियार।

नैना हरि सौं ऐसे उरझे,सुरझन की नहीं नेंकहु आस।

मैं जब ते या ब्रज में आई
घूँघट कबहु न खोल्यो माई
काहू ते नहिं हँसी हँसाई
बचती रहियो नंदलाला सों, कहती मेरी सास।
बचती रही बहुत भय खाती
जानें कहा करै उत्पाती
एक दिना मैं जमुना जाती
गैल गिरि मोतिन की माला, ढूंढ फिरी चहुं पास।
माला ढूँढ रच्यो हरि जाला
पीछे टेर रह्यो नंदलाला
माला परी मिली ब्रजबाला
मैंने पीछे मुरकैं देख्यो, सुन्दर रूप प्रकास।
मो देखत ही भई ठगोरी
गई कहाँ वह लाज निगोरी
नैन धरे को फल देख्यो री
नैना चुभे नुकीले हियरे मधुर हास की फाँस।।

ठाड़ो रहियो रे मत जैयो तेरी सौं मैं आऊँगी।।

कुँवर लाड़ले नन्द महर के
तो ते नेह लग्यो मन करके
मैं वारी या श्यामल रंग पै
जल भरवे निकसी हूँ, कैसे रीती जाऊँगी।
याही कदमन नीचे आऊँ
बछरा पानी प्यायवे लाऊँ
पक्की कर लै अब मैं जाऊँ
चूनर मेरी छोड़ दै, माखन मिसरी लाऊँगी।
जैयो मत ह्यांई मिल जैयो
तौ लौं कान्हा वंशी बजैयो
या वन में तू गाय चरैयो
मेरे मन की रखियो, तेरे गुन मैं गाऊँगी।
मैं तो फूल, भंवर तू चंचल
उड़-उड़ अइयो मेरे अंचल
निधरक रस लीजो तज कें छल
मैं गोरी तू मेरो रसिया, जोट मिलाऊँगी।।

मैं वारी तेरी अइयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ सदमाखन।।

ऐसो माखन कोउ न चाख्यो
मैं वारी तेरी खैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
ऐसो माखन कोउ न देख्यो
मैं वारी हँस पैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
ऐसो माखन मीठो रस भर्‌यो
मैं वारी रस लैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
ऐसो माखन सब भुलवावै
मैं वारी मत जैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
वंशी बजैयो नाच नचैयो
मैं वारी कछु गैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
तिरछी चितवन देख-देख कें
मैं वारी हँस दैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।
मेरी गलियन नित-नित अइयो
मैं वारी तंह छैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ..।।

------o------

खेलैं गेंद कृष्ण ब्रजराय बिरज की डागरिया।
पनिहारी उत ते जाय सीस पै गागरिया।।

खेलत गेंद गिरी मग माहीं प्यारी लई उठाय,
हरि की दृष्टि बचाय लाड़िली अंचरा लई छिपाय,
रंगीली चूनरिया। खेलैं गेंद...
ढूंढत हार गये नंदनंदन चतुराई गई भूल,
मुसक्याई वृषभानुनंदिनी श्री यमुना के कूल,
समझ गये सांवरिया। खेलैं गेंद...
मेरी गेंद लई है तुमनें, दै देओ भानुदुलार,
मैं भोरौ तुम चतुर नागरी हमने मानी हार,
चुराई तब बांसुरिया। खेलैं गेंद...
पहले लियौ नचाय लाल को, फिर वंशी बजवाय,
मन चाही करवाय कृष्ण ते, गेंद दई तरसाय,
कियौ वश नागरिया। खेलैं गेंद...

------o------

तेरे बिना मैं रोई रे सांवरिया तेरी याद में,
कन्हैया तेरी याद में।।

जब आई रैन अंधेरी, तालों पै आई अकेली
घाटों पै बैठी रोई रे, सांवरिया तेरी..।
जब आई रैन अंधेरी, जमुना पै गई अकेली
जमुना तट बैठी रोई रे, सांवरिया तेरी..।
जब आई रैन अंधेरी, वन कुंजन गई अकेली
डाली पकड़ मैं रोई रे, सांवरिया तेरी..।
जब दही चलावन बैठी, घर में मैं रही अकेली
मथनियां पकड़ मैं रोई रे, सांवरिया तेरी..।

------o------

कन्हैया प्यारे आय जइयो, बरसानों मेरौ गाँव।।

बहुत दिना ते बाट देख रही सुन्दर श्याम सुजान,
अबतो दरस दिखायजा लाला, अटक रहे हैं प्रान,
तू मोय जियावन आय जइयो, बरसानो मेरो गाँव।
सूनो सूनो लागत प्यारे तो बिन सब संसार,
रस की बगिया सूख गई है, सूख गयो व्यवहार,
तू मेहा बनकें आय जइयो, बरसानो मेरो गाँव।

वंशी मधुर बजाय कें मन मेरो लीयो छीन,
बावरी सी इत-उत मैं डोलूँ, जल बिन तरफै मीन,
वंशी की टेर सुनाय जइयो, बरसानों मेरो गाँव।
टेढ़ी पाग लटकती बायें, तापै पेंच जड़ाव,
कजरारे तीखे नैना लटकी लट देत घुमाव,
प्यारी झाँकी दिखराय जइयो, बरसानों मेरो गाँव।।

------o------

श्याम रंग में ऐसी भीजी, श्याम भई मैं श्याम।।

घर में श्याम श्याम बाहर हू, जित देखूं तित श्याम,
मेरे तो जीवन हैं श्यामहि, श्याम भई मैं श्याम।
सोवत श्याम श्याम जागत ही, चलते फिरते श्याम,
श्याम श्याम की रटना लागी, श्याम भई मैं श्याम।
पनघट श्याम श्याम जमुना तट, ब्रज गलियन में श्याम,
डगर-डगर में श्याम देख रही, श्याम भई मैं श्याम।
कुञ्ज-कुञ्ज में श्याम डार में, पात-पात में श्याम,
दूध दही माखन में श्यामहि, श्याम भई मैं श्याम।
श्याम सजन श्यामहि प्रिय संगी, मेरी सजनी श्याम,
श्याम प्राण और श्यामहि काया श्याम भई मैं श्याम।

मन तो मेरो लै लियो राधा के रसिया श्याम नें।।

यमुना तट पै मैं खड़ी नीले जल से टेरूं,
लहरों से उठ कर ओ रसिया ऐयो मेरे सामने।
गहवर वन में मैं खड़ी लता वृक्ष में टेरूं,
वन उपवन ते बाहर रसिया ऐयो मेरे सामने।
कुंज निकुंजन में मैं खड़ी पात-पात से टेरूं,
फूलन ते बाहर ओ रसिया ऐयो मेरे सामने।
गिरि गोवर्द्धन में खड़ी ठौर-ठौर पै टेरूं,
शिला-शिला ते रूप धरे तू ऐयो मेरे सामने।।

------o------

आई घटा कारी-कारी, आओ श्याम मुरारी।।

आधी रात में बादर गरजै
बिजुरी चमकै भारी, आओ..।
मोतिन झालर पचरंग पलका
ऊँची हमारी अटारी, आओ..।
ठंडी ब्यार चलै पुरवैया
खूटी हमारी किवारी, आओ..।
आस-पास नांय कोई बाखर

सब ते रहूँ में न्यारी, आओ..।
कोयल कूंकै मोरा बोलै
झींगुर की झनकारी, आओ..।
नहनी परैं फुहार सुहानी
ओढ़ कमरिया कारी, आओ..।।

------o------

चलो ऐयो तू मेरी डगरिया।।

नंद महर के कुंवर लाड़ले,
मैं वारी रे तेरी सांवरी सुरतिया।
टेढ़ी पाग लटुरिया कारी,
मैं वारी रे तेरी मृदु मुसकनियां।
अलबेलो छैला तू रसिया,
मैं वारी रे तेरी उठती उमरिया।
गावै नाचैं धूम मचावै,
मैं वारी रे तेरी मीठी बंसुरिया।
रस के भरे रसीले नैना,
मैं वारी रे तेरी तिरछी नजरिया।
बड़ी-बड़ी बैंया लै गलबैंया,
मैं वारी तेरी पतरी कमरिया।।

ऊधम मोपै सह्यो न जाय,
यशोदा हम तो बसें कहुँ और।।

आगे पीछे मेरे डोलै तेरो नंद किशोर,
घूंघट खोलै बैंयां पकरै, खेंचै अंचरा छोर।
ग्वालबाल लै घर घुस आवै, तेरो माखन चोर,
माखन दूध दही सब चोरै, मटकी देवै फोर।
गली सांकरी मारग घेरै, करै अनीती घोर,
मांगै दान अटपटो छैला, पकर दई झकझोर।
अचकै आय झरोकन झांकै, बात करै रस बोर,
कंह लों कहों कुचाल लाल की, रात न जानै भोर।
बड़ो लाड़लो कान्हा मेरी, बात सुनै ना थोर,
छोड़ जांयगी यह ब्रज नगरी, अंतहि ठौर टटोर।।

------o------

पिय तेरे संग नचूंगी नचूंगी।।

कुल की लाज भार में डारूं
घूंघट आग दऊंगी दऊंगी।
कोई कितनो रोकै टोकै
तोते आय मिलूंगी मिलूंगी।

कोई कितनो बंधन बांधै
तेरे संग चलूंगी चलूंगी।
जैसे रखैगो तैसे रहूंगी
तेरे बिन ना रहूंगी रहूंगी।
भूख प्यास औ मरनो जीनों
विपत अनेक सहूंगी सहूंगी।
यमुना तट कदमन की छैया
बंशी मधुर सुनूंगी सुनूंगी।।

------o------

श्याम नें अकेली पायकें घेर लई मोहि आज,
बैरिन आय गई लाज।।

जाय रही मैं घूँघट मारे, पीछे ते चुप आयो वो,
अचक-अचक मेरो अंचरा पकर्‌यो, खैंच्यो औ चौंकायो वो।
मैंने मुड़कें पीछे देख्यो नील कमल ब्रजराज।।
इक टक देख रह्यो वो मोकूं, मोपै चितै न जावै है,
मीठे-मीठे सैन चलावै, मेरी आँख झंपावै है।
लाजन मेरे आँसू आगए देखत भयौ अकाज।।
धीरे-धीरे कहन लग्यो कछु, मेरी समझ न आवै है,
बांह गहत तन कांपन लाग्यो, तन की दशा हिरावै है।

बेसुध सी मैं ऐसी है गई, भूली सबै समाज।।
वा दिन ते मेरी अँखियन में,ऐसो रूप समायो है,
घर में वन में जल थल नभ में,सब ठां श्याम दिखायो है।
कैसी प्रीति जुरी बैरिन सी, गिरी हो जैसे गाज गाज।।

------o------

अइयो-अइयो रे सांवरिया मेरी गलियन अइयो रे।
जमुना तट पै गाँव लहर को झोंका खैयो रे,
छपका छपकी चुब्बक खेलैं, खूब नहैयो रे।
जमुना तट फूली फुलवारी बगियन अइयो रे,
कमलन की माला पहराऊँ, हार धरैयो रे।
कारी काजर धौरी धूमर गाय घिरैयो रे,
खिरक दोहनी लैंके आऊँ, दूध दुहैयो रे।
पनघट पै लै गागर आऊँ, तू मिल जैयो रे,
गागर भर ठाड़ी जब देखूँ, आय उचैयो रे।
बड़े भोर मैं दही बिलोऊँ, मिसरी पैयो रे,
सद लौनी माखन की दूंगी, झिक कें खैयो रे।
ऊँची अटरिया लाल किवरिया चढ़ के जैयो रे
फूलन सेज लिपट के तन की तपन बुझैयो रे।।

सांवरे तोहे नन्द दुहाई, अइयो रे कुँवर कन्हाई।।
जो तू आवै पीरी फाटै
मैं तो मिलूंगी दह्यो चलाई, अइयो रे..।
जो तू आवै सूरज ऊगे
मैं तो मिलूंगी पनघट जाई, अइयो रे..।
जो तू आवै तनक चढ़े दिन
मैं तो मिलूंगी जमुना न्हाई, अइयो रे..।
जो तू आवै बीच दुपहरी
मैं तो मिलूं पिछवारे आई, अइयो रे..।
जो तू आवै सांझ की बिरियां
मैं तो मिलूंगी गाय दुहाई, अइयो रे..।
जो तू आवै रैन अंधेरी
मैं तो मिलूंगी सबन सुवाई, अइयो रे..।।

------o------

सावन

मोरा कोंहक कोंहक के बोलैं, आई सावन की बहार।

नभ में घुर रहे बादर कारे
जैसे ऊपर बजैं नगारे
देख कें मोरा पंख पसारे
झूम-झूम के नांच रहे हैं मंदी परै फुहार।
ऐसे में निकसे पिय प्यारी
मन में लहर उठी मतवारी
लता-पतन की झूमन न्यारी
पटुका और चुनरिया फहरै सीरी चल रही ब्यार।
वन विहरैं रस भीनी जोरी
सुन्दर नवल किशोर किशोरी
चले जात गहवर वन ओरी
मधु टपकाय लता फूलन ते बरसावैं रसधार।
कबहूँ जावैं मोर-कुटी चढ़
कबहूँ देखैं चढ़ै मान-गढ़
कबहूँ गलबैंया विलास-गढ़
धन्यधन्य ब्रह्माचल विहरैं जहाँ युगल सरकार।।

बादर गरजैं बिजुरी चमकै पानी बरसै गोलाढार।।

बादर चढ़ रहे घूम-घुमारे
धौरे पीरे कारे कारे
कोई कोई धूम धुमारे
मानों फौज चढ़ी राजा की करदे पटिया पार।
तैसी ब्यार चलै पुरवैया
देय झकोरे है सुखदैया
मोरा लेय रहे फिरकैया
बूंदन की वे लगैं पछाटैं अर्राटे की मार।
ऐसे में इक बनी अटारी
जा पै बैठे प्रीतम प्यारी
श्री राधा और श्री बनवारी
हरियाली की छटा देख रहे सावन पै बलिहार।
देखैं गहवर की हरियारी
सुनैं कूक कोयल की प्यारी
पी पी करै पपैया भारी
सुन रीझैं रस भीजैं देवैं गरबैंयन के हार।।

सावन की अंधियारी रात बिजुरिया चमकै आरम्पार

घुप्प अंधेरी नभ में छाई
कारी घटा बड़ी टकराई
मानों है रही बड़ी लड़ाई
गहर गहर के कारे बादर गरजैं बारम्बार।
बिजरी कौंध रही मतवारी
अँखियन चौंधा दै रही भारी
थिर न रहै ऐसी सटकारी
बड़ी-बड़ी बूंदन मेहा बरस्यौ है गई धारम्धार।
डरप रही इक ब्रज की नारी
ह्वांई देख रहे गिरिधारी
मन में रीझ बहुत भई भारी
श्री मोहन नें बांह गही जब कीनी तारम्तार।
कामर की हरि करी खोइया
एकइ में गोरी औ रसिया
लाजन गोरी रोकै हँसिया
बाहर भीतर रस बरसै झर लग गई झारम्झार।।

कैसे झूम रहे अम्बर में प्यारे बादर मतवारे।।

टोल टोल हाथी से आये
लटक लटक धरती लौं छाये
चारों ओर घूम रहे धाये
धौरे पीरे धूम धुमारे कजरारे कारे।
गरजन लगे एक संग मिल कें
बरसन लगे बड़ी बूंदन ते
धूंआँधार भयो मेहन ते
ताल तलैया नदी सरोवर भर गये जल भारे।
आय फंसी या लता पतन में
सखी सहेली कोऊ न संग में
इकली रह गई गहवर वन में
लेहु उढ़ाय कमरिया अपनी हा-हा खाऊँ रे।
सुनतइ आये श्री गिरिधारी
खोइ में लीनी ब्रज की नारी
कोयल बोल रहीं धुनि प्यारी
कैसी हरियाली छाई, चल तोय दिखाऊँ रे।

चले संग लै भीतर कुंजन
गोरी भीज रही है लाजन
अंगिया चूनर पकरे हाथन
सुन इक बात रसीली, प्यारी तोय सुनाऊँ रे।।

------o------

झूलन माधुरी

एजी सुनो बंशी बजैया, कन्हैया झूलूंगी हिन्डोरे।।

घर में झूलूं बाहर झूलूं, तेरे संग झूलूं अंगनिया।
ऊपर झूलूं अटरिया पै झूलूं, तेरे संग झूलूं सेजरिया।
कुंजन झूलूं निकुंजन झूलूं, संग झूलूं यमुना लहरिया।
उपवन झूलूं कदम वन झूलूं, झूलत में बाजै बांसुरिया।
फूलन की डारन पै झूलूं, झूलूं में फूलन पटुलिया।।

------o------

आयो आयो मेरे झूलन आयो मोहना।।

फूलन की पटरी फूलन की डोरी,
मेरे फूल हिंडोरा छाये मोहना।
मेरे हिंडोरा पै फूल बिछौना,

मैंने चुन-चुन कलियां सजाये मोहना।
मेरे हिंडोरा पै जूही मालती,
मैंने बेला गुलाब सजाये मोहना।
मेरे हिंडोरा पै खस छिरकायो,
जामें भीनी सुगन्ध फैलाये मोहना।
मेरे हिंडोरा पै बंसी बाजी,
गीत अनेक गवाये मोहना।
मेरो हिंडोरा जमुना तट पै,
लहरन झोंका खाये मोहना।।

------o------

सररर सररर रे हाँ, सररर सररर रे
झूला झूलें राधेश्याम।।

फररर फररर रे हाँ पटका फहरै श्री घनश्याम।
फररर फररर रे हाँ चूनर फहरै प्यारी भाम।
झररर झररर रे हाँ फूलन बरसै कुंजन धाम।
हररर हररर रे हाँ यमुना बह रही आठों याम।
छररर छररर रे हाँ बूंदरिया पर रहीं अविराम।
चमचम चमचम रे हाँ बिजरी चमकै चामाचाम।।

रसीलो सावन आयो, झूलें कदम की छांह।।

विनती सुनिये राधा प्यारी
हरियाली में फूली क्यारी
मुसक्याई सुन भानुदुलारी
कह्यौ यह मन कौ भायो डार चली गरबांह।

चले जात दोउ धीरे धीरे
श्री यमुना के तीरे तीरे
छलक रह्यो जल नीरे नीरे
पपैया बोल सुनायो, कुञ्ज गली की राह।

फूल्यो कदम फूल अति भारौ
झूला फूलन तेई संवारौ
वा पै झूलैं प्यारी प्यारौ
अनौखो रस बरसायो, लता-पतन की छांह।

गीत गवावैं ब्रज की बाला
चिरजीवो राधा नन्दलाला
झोटा में सखि दै रहीं ताला
घोर गीतन कौ छायौ, वृन्दावन के मांह।।

कैसी ऋतु सामन की आई, जामें झूलन की बहार।।

कोयल कैसी गाती डोलैं
मोरा नाचैं पंखन खोलैं
दादुर और चकोरा बोलैं
पी उ पीउ ये रटैं पपैया झींगुर की झनकार।

इन्द्र-धनुष ऊग्यो रंगीलो
बादर झमक चढ्यो गरबीलो
मन्द-मन्द गरजै बरसीलो
नहनी-नहनी बूंदरिया की ठंडी परै फुहार।

ऐसे बचन कहैं मनमोहन
चलीं छबीली चन्द लजोहन
जाय छिप्यौ बदरी के गोहन
रेशम की डोरन ते झूला पर्‌यो कदम की डार।

झूला नव फूलनहि संवार्‌यो
फूलन सब सिंगारहि धार्‌यो
गोद उठाय प्रिया बैठार्‌यो
दोनूँ झूला गावैं बरसै गहवर रस की धार।।

प्यारी झूलन में रस बरसै झूलैं चल के दोऊ आज।

फूल रही कदमन की डाली
जमुना तीर निरखिये आली
नये नये कमलन की लाली
रेशम डोर हिंडोरा डार्‌यौ सामन कौ सब साज।
नवल किशोरी चढ़ीं हिंडोरै
जैसे दामिनी लेत हिलोरै
गावैं गीत चित्त को चोरै
सुन्दर श्याम राधिका गोरी ज्यों बादर संग गाज।
इक हाथन ते डोरी पकरें
दूजे गलबैंया में जकरें
झोटा ते पीताम्बर फहरे
जमुना जल के ऊपर झूला उड़ रह्यो जैसे बाज।
झोटा जोर दिये गिरिधारी
डरपन लगीं प्रिया सुकुमारी
बरजे नहिं मानैं बनवारी
लिपट गईं घनश्याम लाल सौं जोरी अविचल राज।

झूला झूल रहे पिय प्यारी, तीज हरियाली आई है।।

हरी-हरी लता झूम रही प्यारी
छाय रहीं धरती पै न्यारी
मानों सारी हरी संवारी
हरे हरे वृक्षन में ऋतु ये जोबन लाई है।
श्यामा-श्याम हिंडोरे झूलैं
अरस-परस ते मन में फूलैं
प्यारी बतियां कह-कह भूलैं
देखो देखो यह झूलन की ऋतु मन भाई है।
डालन पै बैठे पंछी गन
खेलैं चोंचन में दै चोंचन
पीवैं बरसा के झीने कन
झूलन में रस बरसै कारी घटा सुहाई है।
तीज मनावैं पंछी ब्रज के
लाल लाड़िली के उत्सव के
मोरा नाचैं पंख खोल के
भँवरा छेड़ैं खरज, रागिनी कोयल गाई है।।

झूला झूलैं राधा प्यारी, चुनरिया फहर-फहर फहरै।।

सामन की हरियाली छाई
कारी घटा बड़ी घिर आई
ऋतु झूलन की है मन भाई
जमुना तीर बहै पुरवैया सरर-सरर सररै।
झूला पर्‌यो कदम की डरियाँ
झीनी पर रहीं नहनी बुंदियाँ
झोटा देय रही सब सखियाँ
मुख पै लटक रही लट कारी लहर-लहर लहरै।
उरझ परी वैजन्ती माला
सुरझावत हैं श्री नन्दलाला
खैंच लियो तब भोरी बाला
टूट परी मोतिन की माला छहर-छहर छहरै।
ररकैं मोती झूला पर ते
सखियाँ बीन रहीं नीचे ते
टपकैं खिले फूल ऊपर ते
फूलन गहना हार झरैं हैं झहर-झहर झहरैं।

मुरलिया मधुर बजाई झूलत में गोपाल।।

झूला झूल रहे गिरिधारी
संग बैठी कीरति सुकुमारी
मुरली सुनत मगन भईं भारी
रीझ कैं कण्ठ लगाईं, नवल किशोरी बाल।
गावन लगीं मल्हार कुमारी
कोयल मौन भईं मतवारी
मोर पपैया हू बलिहारी
रसीली तान सुनाई, हाथन सौं दै ताल।
सोई तान भरैं मुरली में
जो-जो प्यारी गावैं स्वर में
लाग डाट के या गायन में
प्रेम की बरसा छाई, भीजैं राधा लाल।
राग मालिका गाय दिखावैं
ताल मालिका भेद बतावैं
लय माला सुन्दर दरसावैं
अद्‌भुत भाव दिखाई, धारैं स्वर के माल।।

झूला झूलैं यमुना के किनरिया, राधा संग सांवरिया।

झूला कदम की डारन डार्‌यो
झूला फूलन तेई संवारयो
ठंडी बह रही ब्यार पुरवैया, राधा संग..।
चोटी श्यामा जू की लहरै
पटुका गिरिधारी को फहरै
राधा रानी की उड़ती चुनरिया, राधा संग..।
मोरा पंखन खोल पसारे
झूमैं नाचैं हैं मतवारे
पीऊ-पीऊ बोलै प्यारो रे पपैया, राधा संग..।
कारे कारे बादर आये
उमड़ घुमड़ कर ऊपर छाये
कैसी चमक रही है बिजुरिया, राधा संग..।
फूल रही है कदमन डारी
सुगन्ध फूलन की है भारी
झीनी-झीनी पड़ रही फुहरिया, राधा संग..।
बेला जुही मोंगरा फूले
फूल फूल पै भंवरा झूले

प्यारी लागै नन्ही-नन्ही बूंदरिया, राधा संग..।
बादर धीरे धीरे गरजैं
ताल मृदंग बजै मन लरजै
मीठी बाजै मोहन की बांसुरिया, राधा संग..।
झूला ऊपर नीचे जावै
आंचर प्यारी को उड़ जावै
लग रही नटवर की ये नजरिया, राधा संग..।।

------o------

अरे राधा रानी चढ़ी हिंडोरे, लैकें गिरिधर को झूलैं।।

इक घन गरजै इक घन बरसै
अरे पुरवाई चलै झकझोरे, लैकें गिरिधर..।
बादर बीच बीजरी चमकै
अरे इत भामिनी लेत हिलोरे, लैकें गिरिधर..।
झीनी बुंदिया ऊपर पड़ रही
अरे झरै सीस ते माला फूलें, लैकें गिरिधर..।
पपीहा बोलैं कोयल गावैं
अरे इत चुनरी उड़ै न थोरें, लैकें गिरिधर..।।

कदम वन झूलन आई श्यामा।।

फूलन सारी फूलन अंगिया,
वो तो फूलन लंहगा लाई श्यामा।
कदम के फूलन सज्यो हिंडोरा,
वो तो पटुरी कदम की लाई श्यामा।
कदम फूल की बनी कौंधनी,
कदम के बिछुवा लाई श्यामा।
कदमन कुंडल कदम की गूंठी,
वो तो फूलन गहने लाई श्यामा।
कुँवर कान्ह को संग बैठार्‌यो,
वो तो फूल घटा सरसाई श्यामा।।

------o------

झूलन लागीं झूला प्यारी हुलसाय।।

यमुना तीर कदम की डारन,
हिंडोरे संग बैठे गिरिधर राय।
झमकि हिंडोरे पै जैसे बैठीं,
चुनरिया हाये फरर-फरर फहराय।

चल्यो हिंडोरा तेज चाल पै,
जियरवा हाये धकर-धकर धकराय।
जैसे हिंडोरे पै दुमची लागी,
लिपट गई पिय सौं डरप डरपाय।
जबहि हिंडोरा पै गावन लीगी,
कोयलिया हाय मौंन भई सकुचाय।।

------o------

श्री राधा प्रेम नदी उमड़ी।।

फैली ब्रज मण्डल वृंदावन रस ही रस उमड़ी घुमड़ी
नव जीवनी सोन चंपा तन फूलन फूली सोन छड़ी
पिय के तन में मन में हिय में राधा मूरति रहति गढ़ी
श्याम सिंधु सौं मिलति कुंजमें सदा रहत पिय अंग पड़ी
चापत चरन बिहारी निशिदिन नित्य सुहागिन भाग बड़ी
नित्य बिहार महारस सुख की राधा पदरेणुका कड़ी।।

------o------

अवतार लीला

श्रीकृष्ण जन्म बधाई

जन्में दीनदयाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी भादों।।

कृष्ण चन्द्र जन्मे मथुरा में
दूर भयो अंधियारो जग में
जगे भाग्य सब भक्त जनन के
बन्धन खुल गये मात-पिता के
कट गई बेड़ी जाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
सोय गये सब पहरे वारे
कारागृह के खुल गये तारे
बालक सूप मध्य पौढ़ायौ
मात-पिता को हिय भर आयो
वसुदेव चले लै लाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
रैन अंधेरी चल्यो न जावै
चमक बीजुरी राह दिखावै
बादर रिमझिम जल बरसावैं
देख पिता कौ मन घबरावै
कियौ छत्र जब व्याल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।

चढ़ रही जमुना तीखी धारें
जल में पाँव कहूँ ना ठहरे
डूब रहे वसुदेव पुकारे
कोई बचावो लाल हमारे
हरि नीचे पग डाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
चरन परस के उतरी जमुना
पार भये भय रह्यो कछुक ना
पहुँचे नन्द भवन में जाई
सोय रहीं जहाँ यशुदा माई।
सब सोये तेहि काल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
यमुना ढिंग लाला पौढ़ायो
कन्या लै निज गोद लगायो
चलन लगे तब हिय भरि आयो
अँखियन ते अँसुवा बरसायो
छांड़ चले गोपाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
कन्या लै कारागृह आये
बन्धन ज्यों के त्यों लग आये

रोवन लागी कन्या भारी
आयो कंसासुर संहारी
छीन लई वह बाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
पाँव पकर पटकी बरि आई
अष्ट भुजा भई नभ में जाई
देवी बोल रही यह बानी
रे शठ तेरी मति बौरानी
जनम्यो कहुँ तब काल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
भोरहि गोकुल बज्यो बधायो
नन्द महर घर ढोटा जायो
आनंद भयो नन्द के द्वारे
लाल कन्हैया की जैकारें
नाचैं दै दै ताल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।
हरि के चरित बड़े सुखदाई
जन्म अष्टमी लीला गाई
कृष्ण चरित जो गाय सुनावै
निश्चय कृष्ण चरण कूँ पावै
भक्तन के प्रतिपाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी..।।

बाबा नन्द द्वार पै ठाड़े, कह रहे सुनो मेरे प्यारे।।
जन्म्यौ पूत एक मेरे जो रहे भाग भारे,
तुम बारन कौ भयौ लाड़िलौ आँखिन के तारे।
जो चहिये सो लेउ निसर कें, हम तो हैं त्यारे,
अपने मन की आशा पुजवौ, बूढ़े औ बारे।
सोना चांदी रतन अमोलक मोतिन के हारे,
हार हमेल गले कौ कठुला आभूषण सारे।
पाग पिछौरा और अंगरखा पटुका दै डारे,
खुरचन दूध दही लडुवन के भोजन सुखकारे।
उछर उछर कें हेरी गावैं मदमाते ग्वारे,
नन्द बाबा कौ ढोटा जीवै, दै रहे जैकारे।
द्वै लख गैयां दई विप्र मंत्रन कौ उच्चारे,
बछरा उछरैं कूदैं घननन गर घण्टा वारे।
तिल के सात पहाड़ दिये जो ढके रत्न ढारे,
पूजा पितर देवतन की करवाय अशुभ टारे।
दूध दही छिरकैं माटन ते चले बह पनारे,
आँगन पाँव न ठहरें, ऐसे बहे तहाँ खारे।।

बधाई बाजै मन्दिर में मंगल गावैं हुलसाय।।

न्हाय धोय के नन्द बबा जू बैठे फर्स बिछाय
सोने सींग मढ़ी गैया दई सब बाम्हनन बुलाय
मंत्र बोलें मन्दिर में, कानन में दूब धराय।
लै दधि मांट सीस पै गोपी,आई महल के बीच
दूध दही की होरी है गई, भई रिपटनी कीच
हार टूटैं मन्दिर में गहना खुल खुल गिर जाय।
ग्वाला नाचैं गोपी नाचैं रिपट-रिपट गिर जांय
तारी दै-दै हँसैं हँसावैं, खेलैं खाय सिहाय
कौर देवैं होंठन में घूंघट में कर पहुँचाय।
ग्वालन को दिये पाग पिछौरा पटुका झुब्बादार
गोपिन को अंगिया लहंगा जा में नारो फुंदनादार
झमक नाचैं मन्दिर में नर नारी जोट मिलाय।
जसुदा ढिंग आईं सब गोपी कहैं बधाई आज
लाला सदमाखन कौ लौंदा श्याम रंग सरताज
लाल देखैं मन्दिर में, आसीस देंय मन भाय।।

------o------

कान्हा जनम लियौ आधी पै, घिर रही बादरिया कारी

भादों कृष्ण अष्टमी आई
सब जग में अंधियारी छाई
नखत रोहिणी नभ में भाई
ताही समय चन्द्रमा ऊग्यौ सबकौ सुखकारी।
जै जैकार मची अम्बर में
नाच रही अपसरा गगन में
गंधर्वन के गान तान में
चढ़ विमान सुर करन लगे फूलन बरसा भारी।
नदियाँ सुख सौं बहन लगीं सब
फूली पृथ्वी पवन चल्यौ जब
चारों ओर भये मंगल तब
जीव चराचर सुखी भये सब सृष्टि भई प्यारी।
अग्निहोत्र की अग्नि उठी जल
भय ते पहले बुझी कंस खल
साधुन के मन आनंद निश्चल
श्री देवी भू देवी मिल ब्रज छाईं कर यारी।।

बाजै बाजै री बधाई मैया तेरे अंगना।।

बड़ौ अनोखो लाला जायो
श्याम रंग सबको मन भायो
ब्रजवासिन कौ मन हुलसायो
उमग-उमग सब चले नन्द घर बांधे बंधना।
नन्द भवन ऐसौ सजवायौ
बैकुण्ठहु कौ दियौ लजायौ
सब लोकन ते घनो सुहायौ
टोल टोल गोपी उठ धाईं गावैं मंगना।
बाम्हन अपने वेद पढ़त हैं
नंद बाबा जू दान करत हैं
पाग पिछौरा ग्वाल लेत हैं
गोपिन को दियो लहंगा फरिया रतन जटित कंगना।
नाच नाच के प्रेम दिखायौ
नन्द भवन में धूम मचायौ
देंय असीस सबन मन भायौ
अरी जसोदा रानी तेरौ जीवै छंगना।।

गोपी झमक झमक कें नाचैं,
ग्वाला गावैं मीठे तान।।

नन्द भवन में बजी बधाई
कोयल सी कौंहकी सहनाई
ढोल झांझ ढप धुनी सुहाई
गहक गहक के बाजन लागे चारों ओर निसान।
हेरी कह-कह ग्वाला गावैं
लकुट पिछौरा लै फहरावैं
उछरें और सबन उछरावैं
तारी दै दै हँसे हँसावै नैंक न राखें मान।
झूमक नाचैं ब्रज की नारी
ऐसौ कोहकंदो भयौ भारी
मन भाई सी देवैं गारी
ऐसौ आनन्द बढ्यौ नन्द घर जब जनमें ब्रजप्रान।
मणि कुण्डल कानन में झूमैं
गुंथे फूल झुक गालन चूमैं
उछरत हार कुचन पै घूमैं
झमकैं रवा कौंधनी बिछुआ मुंदरी कर पग पान।।

खिल गये कमल रात में प्यारे,
जब हरि जनमें आधी रात।।

भादो कृष्ण पक्ष शुभ आयो
रोहिणी बुद्धवार दिन गायो
तिथि अष्टमी सुमंगल छायो
आठें में भई पूरणमासी ऐसो निकस्यौ चन्द,
विद्याधरी सुनाचतीं सबके मन निर्द्वन्द्व।
निर्मल भईं दिशाएं सगरी, तारन सजी बारात।।
खिल गये कमल रात में प्यारे..।।१।।

पृथ्वी देवी मोदमयी हैं
विविध रतन सौं छाय रही हैं
हरि पति आये वधू भई हैं
ब्रह्मचारी वामन परशु सीतापति दामाद,
अबलौं तरसी अब ब्रजपति संग विलसूंगी धर ह्लाद।
रंग बिरंगी फूलन साड़ी धरनी पहरि सुहात।
खिल गये कमल रात में प्यारे..।।२।।

चौमासे की उमगी नदियाँ
निर्मल जल सौं झरती झरियाँ
संगम कर बतराती सखियाँ
प्रभु अवतार अनेक धरि नदियन मानी मात,
कृष्ण रूप पति पाय कें सब नदियाँ सरसात।
कालिन्दी पति जीजा सौं बतरावैंगी बलखात।।
खिल गये कमल रात में प्यारे..।।३।।

पाँच तत्व हू मगन भये सब
हम कूँ शुद्ध करेंगे हरि अब
व्योमासुर वध सौं शोधें नभ
तृणावर्त वध वायु कालिया सो जल माटी खाय,
भूशोधै कर पान अग्नि कौ सबै तत्व हुलसाय।
निर्मल तत्वन सौं सब सृष्टि भई प्यारी रसमात।।
खिल गये कमल रात में प्यारे..।।४।।

------o------

कैसे जाऊं रे हाँ-हाँ नंद जू के द्वार,
सोच रहे वसुदेव जी।

हाथ हथकड़ी पांयन बेड़ी, लग रहे वज्र किवार
बादर गरजै पानी बरसै, भयो घोर अंधियार

डरप रहे वसुदेव जी।

या पार मथुरा वा पार गोकुल, बीच यमुन की धार
चढ़ रही नदिया भंवर पड़ रहे सूझै नहीं किनार
देख रहे वसुदेव जी।

खुली हथकड़ी खुल गई बेड़ी, खुल गये वज्र किवार
शेष नाग ने छत्र कर्‌यो है, चमकै नव लख तार
जाय रहे वसुदेव जी।

मथुरा सोयो गोकुल सोयो, सोई सृष्टी सारी
लीलाधर लाली लै आये, योग माया औतारी
आय गये वसुदेव जी।

लग गये तारे लग गई बेड़ी रोई कन्या भारी
आयो कंसा पटक पछारी अष्टभुजा भई नारी
कर जोरैं वसुदेव जी।

बोली देवी नभ में ठाड़ी, ओ रे अधम कसाई
तेरौ काल कहूँ है प्रगट्यो, काहे शिशु मरवाई
सिर नावैं वसुदेव जी।।

------o------

नन्द के भये नंदलाल, बिरज में आनन्द भयो।।

कौन ने पूजे कूआं बावड़ी, कौन ने पूजे ताल
यशोदा ने पूजे कूआं बावड़ी, नन्द जू ने पूजे ताल।
कौन के बाजे ढोल मंजीरा, कौन के नगारे पै ढाल
यशोदा के बाजै ढोल मंजीरा, नन्द जू के बाजे ढाल।
कौन ने बांटे लडुआ गूंजा, कौन ने छकाये माल
जसुदा ने बांटे लडुआ गूंजा, नन्द जू ने छकाये माल।
कौन पहराये लंहगा फरिया, कौन ने पटका माल
जसुदा पहराये लंहगा फरिया, नन्द जू ने पटका माल।
कौन ने लुटाये गहना गुरिया, कौन ने हीरा लाल।
नांचै गावैं सब ब्रजवासी, उछर-उछर दैं ताल
दै असीस मगन सब गोपी, चिरजीवो गोपाल।।

------o------

श्री राधा जन्म बधाई

गावो गावो री बधायो,रानी कीरति के घर आज।।

रमक झमक के चलो भानुघर सजे धज के सब साज
राजा श्री वृषभानु महल में मंगल के भये काज।
गांम गांम ते आईं नारी लोगन जुरे समाज,
धौंसा की धधकार सुनो जहँ ठाड़े हैं महाराज।
बीना वैन और सारंगी महुवर हू रहे बाज,
कोउ नांचै कोउ हाँसी देवैं कौन करे ह्वां लाज।
अनहोनी भई लली सोहनी लोकन की सरताज,
जाके प्रगट होत बरसाने सबके दुख गये भाज।
नन्दगाँव ते नन्द जसोदा आये महल विराज,
कीरति जसुदा भेंटी जैसे भेंटी हैं द्वै गाज।
लाली ढिंग लाला पौढ़ायो जोरी अति छवि छाज,
पलना में खेलैं और किलकैं रूप के दोउ जहाज।।

------o------

राधा जनम भयौ बरसाने, आये नन्द यशोदा धाय।

सुन सुन फूलीं जसुदा माई
लिये गोद में कुँवर कन्हाई
गईं जहाँ बज रही बधाई
नाचैं गावैं गीत मनोहर, आनन्द नहीं समाय।
ब्रज गोपी महलन में आवैं
कन्या लै के गोद खिलावैं
जसुमति कीरति हँसैं हँसावैं
या बेटी के ऊपर लाखों बेटा हू नहिं भाय।
कान्हा को राधा पै वारैं
तन मन प्राण सबै न्यौछारैं
देवन को अंचरा पैसारैं
देख देख जसुदा की करनी कीरतिहू मुसकाय।
नंद वृषभानु सभा में ठाढ़े
कौंरी भर भर मिलै जु गाढ़े
पौरी में बज रहे नगाड़े
खुर और सींग मढ़ी सोने ते ऐसी दीनी गाय।।

आनन्द झूम रह्यो वृषभानु भवन में,
राधा जनमी आय।।

सब लोकन में बजी बधाई
भादों सुदी अष्टमी आई
पीरी फाट रही सुखदाई
दुंदुभि नभ में देव बजावैं, फूलन कूँ बरसाय।
ध्वजा पताका फहरन लागे
बाजे बहुत बजावन लागे
घर घर धूम मचावन लागे
बरसाने की गली गलिन में मंगल ही रह्यो छाय।
दूध दही के मांट ढुरावैं
ऐसी गाढ़ी कीच मचावैं
कन्या को आसीस सुनावैं
बहुतै भाग हमारे भैया या लाली को पाय।
सजी धजी गोपी जन आवैं
उमा रमा के भाग लजावैं
श्री राधा को लै दुलरावैं
जाकौ ध्यान धरैं त्रिभुवन पति मोहनहू तरसाय।।

रानी कीरति के कन्या भई, नांचैं नन्दराय वृषभान

मंगल भयौ बड़ो अनहोनों
आयो नन्द गाँव बरसानों
इक संग नांचैं समधी दोनों
देखदेख जसुदा औ कीरति हंसि न्यौछारैं प्रान।
मन्दिर के सब गली गिरारे
चन्दन और अतर के गारे
बहु सुगन्ध के बहैं पनारे
केला खम्भ धुजा और झालर मोतिन के बन्धान।
ऐसी धूम मची बरसाने
नर-नारिन के जूथ जुराने
बाजे बहुत बजे सहदाने
इक नाचै इक सैन चलावै, गावैं मीठे गान।
कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई
लैंकें चाव चले उमगाई
बज रही आठों पहर बधाई
जै जैकार करैं अम्बर में चढ़ कें देव विमान।

अरि बरसाने बजी बधाई, कीरति नें लाली जाई।।

वन्दनवार बंधे महलन में
अरि ऊँचे पै धुजा लगाई, कीरति ने..।
उमा रमा वाय धन्य कहैं
अरि जो बरसाने की दाई, कीरति ने..।
हार दियौ हियरे कौ रानी
अरि वाय खपरा रतन भराई, कीरति ने..।
भानुमति राधा की भूआ
अरि वो लेत नेग मन भाई, कीरति ने..।
दौरी-दौरी फिरैं मलिनियां
अरि वो तो फूलन गजरे लाईं, कीरति ने..।
दौरी-दौरी फिरैं ढांढ़िनी
अरि वंसावलि नाच सुनाई, कीरति ने..।
जसुदा गावत चली बंधाये
अरि वो तो भानुराय घर आई, कीरति ने..।
कनक थार में नीली झंगुली
अरि वो चूरो हंसली लाई, कीरति ने..।

चकवा चकई भौंरा भौंरी
अरि वो संग में कुंवर कन्हाई, कीरति ने..।
धन्य कूंख कीरति मैया की
अरि जाते राधा ब्रज में आई, कीरति ने..।
जुग-जुग जीवैं लली भानु की
अरि सब दैं असीस सुखदाई, कीरति ने..।

------o------

कीरति जू के कन्या भई, जै जै राधा रानी की।।

एक लली अनहोनी जनमी, जै जै राधा..।
वृन्दावन की रानी प्रगटी, जै जै राधा..।
मोहन की स्वामिनी प्रगट भई, जै जै राधा..।
महारास रासेश्वरी प्रगटी, जै जै राधा..।
करुणामयी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।
प्रेमदायिनी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।
रस विस्तारिणी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।
हरिवशकारिणि स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्णाराध्या स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।

ब्रह्माराध्या स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्ण सजीवनमूरी प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्णप्रिया श्री राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्णप्राणाराध्या प्रगटी, जै जै राधा..।
गोपीश्वरी किशोरी प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्ण पूजिता शक्ती प्रगटी, जै जै राधा..।
कृष्ण सेविता देवी प्रगटी, जै जै राधा..।
गौरांगी श्रीराधा प्रगटी, जै जै राधा..।
नित्ययौवने राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
कमलांगी श्रीराधा प्रगटी, जै जै राधा..।
कृपाशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
दयाशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
प्रेमशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
कोकिल कंठी राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
नित्यकिशोरी राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
चित्सौंदर्या राधा प्रगटी, जै जै राधा..।
जैजै राधा रानी की, जैजै श्री महारानी की।।

आज बजी बधाई भोर, राधिका जनम लियो।।

सिंहपौर चढ़ ऊँचे टेरैं, अपने-अपने पटुका फेरैं
ऊंचे कर रहे सोर, राधिका जनम लियो।
बजे निसान नगाड़े बारे, चोट दै रहे बल कर भारे
जैकारे दै रहे जोर, राधिका जनम लियो।
ग्वाला लै रहे पाग पिछोरा, लाल गुलाबी पीरे घौरा
धोती पीरे छोर, राधिका जनम लियो।
लंहगा फरिया गोपी लै रहीं, रतनन के गहने लै पहरहिं
धन बरसै घनघोर, राधिका जनम लियो।
धूम मचावैं नांचै गावैं, घूघट मे ते सैन चलावैं
मुसकावैं मुख मोर, राधिका जनम लियो।
सोने मढ़ी गाय के ठाठैं, दूध दही माखन के माटैं
अंगना में रहे फोर, राधिका जनम लियो।
लोग परस्पर दै रहे हांसी, सबके परी प्रीति की फांसी
बंधे प्रेम की डोर, राधिका जनम लियो।
बरसाने की गली गलिन में,रस बरसै गह्वर कुंजन में
सरसै सांकरी खोर, राधिका जनम लियो।

ब्रह्माचल की ऊँची सिखरन,मंदिर मान होय नित गायन
मोर कुटी पै मोर, राधिका जनम लियो।
सज कै बैठी कीरति रानी, गोद लिये लाली सुखदानी
सब ब्रज रस में बोर, राधिका जनम लियो।
राधा नाम भयो रसदायी, राधा शरण रहत है कन्हाई
भजौ मोह कौ तोर, राधिका जनम लियो।।

------o------

ऊपर के रसिया में **"बंधे प्रेम की डोर..."**तक केवल ***राधिका*** के स्थान पर ***कन्हैया*** बदल दो तो ठाकुर जी की बधाई इस प्रकार होगी...

आज बजी बधाई भोर, कन्हैया जनम लियो।।

बंधे प्रेम की डोर...तक पूर्ववत्...अब आगे इस प्रकार है...

श्रीगोकुल की गली गलिन में,रस बरसै जमुना लहरन में
रस की बढ़े हिलोर, कन्हैया जनम लियो।
सज के बैठी जसुमति रानी,गोद लिये कान्हा सुखदानी
सब ब्रज रस मे बोर, कन्हैया जनम लियो।
नाम भयो रस कौ दायी, पलना खेलै कुंवर कन्हाई
भजो मोह कौ तोर, कन्हैया जनम लियो।।

ढांढिनि कहै सजन सों हंस हंस,
चल बरसाने दोनूं जांय।।

रानी कीरति के भई कन्या तीन लोक भये धन्या,
चलै बधाई गांवै नांचै पावैं जो मन भाय।
ना मैं लूंगी लंहगा फरिया, नाय मैं लउंगी अंगिया,
मैं तो मागूंगी रानी से बरसाने मोहि बसाय।
ना मैं लूँगी सोना चांदी, मोती पन्ना हीरा,
मैं तो लउंगी रानी के मुख को बीरा हुलसाय।
ना मैं लूंगी हार हमेला, कड़ा कौंधनी छल्ला,
मैं लउंगी राधा की झिंगुली दैंगी कीरति माय।
ऐसो नाच दिखाऊँ देखन हारे नाचैं सबरे,
जो देखूँ कन्या के मुख को सबरी आस पुजाय।।

------o------

जनम लियो राधा ने कीरति के बधाई आज।।

रानी कीरति द्वारे आयो, मंगता एक अनन्य
तेरे कूँखन राधा आई, तेरी काया धन्य।
पुरुष जाति ते दान न लैहौं, ये ही मेरी टेक,

उमा रमा हू ते नहि लैहौं, यह व्रत मेरो एक।
भानु बाबा औ नंद बाबा, इनके उदार सब भ्राता,
कृष्ण सखन हू ते नहि लैहौं यद्यपी सब हैं दाता।
जिनके कीरति कुंवरी पियारी, तिन ते दान हि लैहौं,
तिनकी जूठन खाय तिनहि के चरनन माथो नैहौं।
ललिता विशाखा चंपक चित्रा, तुंगविद्या इंदुलेखा,
रंग देवि सुदेवि महासखि पूजौ इनहि विसेखा।
बरसाने प्रगटीं राधा पद, सेवैं श्याम विहारी,
होय बधाई राधा की जंह, नाचैं सब नर नारी।
ज्ञानयोग संयम साधन व्रत, नहि देखैं भूलेहू,
वृन्दावन की धूरि धरैं सिर, सेवैं तन दै मनहू।
कछू न संग्रह करौं न मागौं, नहि कछु आस लगाऊँ,
राधा नाम रटूं राधा जस, सुनूं राधिका ध्याऊँ।
तुच्छ विषय की कौन कहै जब, मुक्ती हू तज डारौं,
बरसाने के घूरे बसके, दिव्यलोक सब वारौं।
सुनत बधाई कीरति मैया, कृपा करी मनमानी,
खोल दियो भंडार कृपा कौ, लली दिखाई रानी।।

आज बधाई आज बधाई राधा जनमी आज बधाई।।
आज भोर शहनाई बाजी राधा जनमी आई,
मोधू बलम जगावन लागी पलका ते लुढ़काई।
भाज चली मैं भानुभवन कौ चोटी खुल लहराई,
देख न पाई धक्का लाग्यो जेठ गिर्‌यो भहराई।
देख खिस्याय गयो देवरिया नाच्यो संग में आई,
पीछे ते चूतर में धक्का दै गेरी मेरी माई।
उठके भाज गई भीतर ते खट्‌टी छाछ लै आई,
भर्‌यो माट देवर पै डार्‌यो हर गंगा अन्हवाई।
तौ लौं मोटी सास हमारी आई लिये बधाई,
ककिया सुसर को करके नंगो तारी रही बजाई।
माखन के गोला लै फेंकैं दधि की कीच मचाई,
गोपी ग्वाला गिर रहे ऊपर एक एक रपटाई।
मोंहड़े खोल द्वार ते देखै बूढ़ी एक लुगाई,
लौंनी घुसी पोपले मोहड़े चाटै जीभ बढ़ाई।।

------o------

राधा जनम बधाई होय, होय मेरी मैया।।

कीरति के जनमी बाला
जंह लुट रही मोती माला
मोती छ र र र होय, होय मेरी मैया।।
कोई माखन माट ढुरावै
दधि दूध पनारो बहावै
झरना झ र र र होय, होय मेरी मैया।
कोई लड़ुवा लै लुड़कावै
बरफी की चोट चलावै
पापड़ प र र र होय, मोय मेरी मैया।
नाचैं फिरकैयां लैके
सब कूदैं तारी दैके
तानन त न न न होय, होय मेरी मैया।
कोई महुवर बैन बजावै
कोई गीत रसीले गावै
ढोलक ढम ढम ढम ढम होय, होय मेरी मैया।

सब नाच रही हैं गोरी
श्री भानु भवन की पौरी
ठुमके ठम ठम ठम ठम होय, होय मेरी मैया।
कोइ कर देवै गठजोरा
नर नारी रस में बोरा
हांसी हा हा हा हा होय, होय मेरी मैया।
कोई ऐंड़ो ऐंड़ो डोलै
मटकै चटकै रस घोलै
घुंघरु छम छम छम छम होय, होय मेरी मेया।।

------o------

बधाई बाजै भानुराय दरबार।।

बजे नगाड़े बड़े भोर ही जनमी भानुदुलार,
घनननननननन घंटा बाजै धौंसा की धधकार।
दधि कौ कांदौ अंगना में भयो बह रहे खार पनार,
माखन के लौंदा फिक रहे जंह बही दूध की धार।
गोपी नाचैं झूमक फुंदना लटके झुब्बादार,
फरिया फररर कर सैंकारो लंहगा घूमघुमार।
ग्वाला गावैं उछर-उछर ढोलक झांझन झनकार,

भानुराय की लाली जीवै कीरति की सुकुमार।
ब्रह्मा नांचै विष्णू नांचै नांचै शिव त्रिपुरार,
तैंतिस कोटी देवता नांचै दै दै के जैकार।
राधा वृन्दावन की रानी महारानी रस सार,
जाको पग चापै चेरो बन रसिया नंदकुमार।।

------o------

चलो लै के बधाई आज री।।

कीरति ने राधा है जाई रसिकन की सरताज री।
बजे नगाड़े धूं धूंकारे बाजे बहुतै बाज री।
कंचन थार हार मौतिन के चौक पुरावन काज री।
गोरी लाली नीली झंगुली और खिलौना साज री।
भौंरा की भिर्र और चकई की फिर्र, छूटी आतसबाज री।
देस देस के ढांढ़ी ढांढ़न, भांडन जुरी समाज री।
भान दान दै धन बरसा करि, दुख दलिद्दर भाज री।
दधि कांदो महलन में है रह्यो, आनंद को है राज री।
फैल रह्यो जस बरसाने कौ सब धामन पै गाज री।
जहां बुहारी रमा लगावै, अद्भुत शोभा छाज री।
गावो गीत जनम मंगल के, नाचौ तज के लाज री।।

बाजै बाजै आज बधाई, माई सोहिलो।।

सोय रही बड़े भोर ही
सुनी महलन में शहनाई, माई सोहिलो।
उमा रमा बरसाने आई
रूप बनाई बनाई, माई सोहिलो।
कोई बनी मालिन कोई बनी ढांढिन
दाई कौ रुप बनाई, माई सोहिलो।
महादेव ब्रह्मा संब धाये
बरसाने में आई, माई सोहिलो।
कोई न्हाय रही कोई जेंय रही
कोई सब सिंगार सजाई, माई सोहिलो।
अपने-अपने घर ते सज-सज
चली सुंदरी धाई, माई सोहिलो।
पहुची भानु भवन जंह बज रहि
आठो पहर बधाई, माई सोहिलो।।

------o------